Tradition
is
Contemporary

परंपरा समकालीन है

Danish textile craft
in art and design

कला एवं डिजाइन में
डेनिश वस्त्र शिल्प

National Crafts Museum
& Hastkala Academy
New Delhi

राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय
एवं हस्तकला अकादमी
नई दिल्ली

Nov. 16th 2022 – Feb. 16th 2023

16 नवंबर 2022 - 16 फरवरी 2023

Museum management:
Sohan Kumar Jha, Director

Curated by:
Mathias Mentze
Alexander V. Ottenstein

Advised by:
Dr. Jyotindra Jain
Ritu Sethi

The exhibition is supported by:

Ministry of Culture Denmark
Embassy of Denmark, New Delhi

Tradition is *Contemporary*

परंपरा समकालीन है

What does it mean to be “traditional”, and what does it mean to be “contemporary”? Does the distinction even carry any meaning any longer in a time when even the most progressive-minded have had to realize that pushing ever-forward and upward simply isn’t possible? This exhibition seeks to show how exploring traditions is actually immensely contemporary. Western modernism sought to wipe away the past, start afresh – the age of today on the other hand is re-engaging with tradition. Craft, the work of the hand, carries a special role in this, as it preserves cultural identity while at the same time furthering it.

In India craft never went away. This very museum is a testament to that. In Denmark, throughout the 20th century, the distinction between “design” and “craft” – or “thinkers” and “doers” – slowly diminished a lot of the local small-scale workshops, but through a group of artisans and

"पारंपरिक" होने का क्या अर्थ है, और "समकालीन" होने का क्या अर्थ है? क्या इस भेद का एक ऐसे समय में कोई अर्थ भी है जब सबसे अधिक प्रगतिशील-मस्तिष्क वाले मनुष्य को इस बात का अनुभव हो कि हमेशा आगे और ऊपर की ओर धकेलना संभव नहीं है? इस प्रदर्शनी में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि परंपराओं की खोज वास्तव में अत्यधिक समकालीन है। पश्चिमी आधुनिकतावाद ने अतीत को मिटा देने,तथा नए सिरे से शुरुआत करने का प्रयास किया है- जबकि दूसरी तरफ आज का युग फिर से परंपरा से जुड़ रहा है। शिल्प,हाथ का काम,इसमें विशेष भूमिका निभाता है,क्योंकि यह सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के साथ-साथ उसे आगे भी बढ़ाता है।

भारत में शिल्प कभी लुप्त नहीं हुआ। यह संग्रहालय उसी का प्रमाण है। 20वीं सदी के दौरान, डेन्मार्क में "डिज़ाइन" और "शिल्प" - या "विचारक" और ”कर्ता” के बीच का अंतर- धीरे-धीरे स्थानीय लघु-स्तरीय कार्यशालाओं में कम हो गया, लेकिन एक समूह के माध्यम से कारीगरों और कलाकारों ने डेनिश शिल्प परंपरा को जीवित रखा। हाल के वर्षों में इस बात का एहसास हुआ कि डिजाइन और शिल्प के बीच यह विवाद प्रासंगिक नहीं हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने के साथ-साथ क्षेत्रीय विकास के लिए इसकी संभावना ,दोनों के संदर्भ में शिल्प के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

← artists the Danish craft tradition was kept alive. In recent years the realisation that this schism between design and craft may not be relevant, has resulted in a renewed focus on the importance of craft, both in terms of sustaining cultural heritage as well as its potential for regional development.

13 examples of Danish textile artists and designers are on display in this exhibition, the earliest from the 1930s up to those working today. They all explore local Danish traditions while often taking direct inspiration from Indian crafts and techniques.

Aside from the directly Danish examples, the oldest pieces here are 9 specimens of Indian textile samples dating back to the early 1800's that were sailed on merchant's ships to be sold in Denmark by the Danish Asia Company. The specimens are found today in the Danish National Archives. The patterns and colors of these examples seem utterly contemporary, and it is evident how they inspired the Danish textile workers of the time and influenced the Danish tradition of textile printing and dyeing.

The exhibition aims to shine a light on these influences and by displaying the works within the surroundings of the Museum's permanent collection, the idea is to showcase how objects and ideas migrate while travelling across different cultures and times.

← इस प्रदर्शनी में डेनिश वस्त्र कलाकारों और डिजाइनरों के 13 उदाहरण प्रदर्शित हैं जिसमें 1930 के दशक से लेकर आज तक काम करने वालों कलाकारों और डिजाइनरों के नमूने शामिल हैं । वे सभी बहुधा भारतीय शिल्प और तकनीकों से सीधे प्रेरणा लेते हुए स्थानीय डेनिश परंपराओं की खोज करते हैं ।

सीधे डेनिश उदाहरणों के अलावा, यहां के सबसे पुराने टुकड़ों में भारतीय वस्त्रों के 9 नमूने हैं जो 1800 के दशक की शुरुआत में डेनिश एशिया कंपनी द्वारा डेनमार्क में बेचे जाने के लिए व्यापारी जहाजों पर भेजे गए थे। ये नमूने आज डेनिश राष्ट्रीय अभिलेखागार में पाए जाते हैं। इन नमूनों के पैटर्न और रंग पूरी तरह से समकालीन प्रतीत होते हैं,और यह स्पष्ट है कि उन्होंने उस समय के डेनिश वस्त्र श्रमिकों को कैसे प्रेरित किया और वस्त्र छपाई और रंगाई की डेनिश परंपरा को किस प्रकार प्रभावित किया।

प्रदर्शनी का उद्देश्य इन सभी प्रभावों पर प्रकाश डालना है और संग्रहालय के स्थायी संग्रह के परिवेश में इन कार्यों को प्रदर्शित करने के पीछे उद्देश्य यह दिखाना है कि कैसे विभिन्न संस्कृतियों और समयों में यात्रा करते हुए वस्तुओं और विचारों का प्रवास होता है।

no. (1) (see map center fold)

Archive Series no. 379
Den Kgl. Danske Manufakturhandel

Various East-Indian textile samples The National Archives. Copenhagen, 1788-1817.

अभिलेखागार क्रम संख्या 379 रॉयल डेनिश निर्माण व्यापार।

विभिन्न ईस्ट-इंडिया वस्त्र नमूने। राष्ट्रीय अभिलेखागार-कोपेनहेगन, 1788-1817.

वस्त्रों के 9 नमूनों का यह चयन 17वीं से 19वीं शताब्दी के दौरान भारत और यूरोप के बीच व्यापार का एक उदाहरण है। विशेष रूप से निर्यात बाजार के लिए बड़ी माला में वस्त्र बनाए गए थे,जहां वे यूरोपीय पूंजीपति वर्ग के बीच उच्च फैशन थे।

यहाँ प्रदर्शित वस्त्रों के नमूने इनके मूल्य को सत्यापित करने और उन पर लगाए जाने वाले सीमा शुल्क का आकलन करने के लिए डेनिश सीमा शुल्क अधिकारियों को दिए गए थे।

ये नमूने कपड़ों के संदर्भ में रोज़मर्रा के वस्त्रों की एक विस्तृत विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं। कई नमूने ऐसे दिखते हैं जैसे कि वे आज बनाए गए हों,और वास्तव में बहुत सारे पैटर्न अभी भी भारतीय ब्लॉक-प्रिंटरों और बुनकरों के बीच मौजूद हैं।

डेनमार्क में व्यापार किए जा रहे इन वस्त्रों और अन्य भारतीय वस्त्रों ने डेनिश वस्त्र उत्पादन और डिजाइन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है, और प्रदर्शित टुकड़ों में, कई पैटर्नों की जाने या अनजाने में पुनर्व्याख्या देखी जा सकती है।

This selection of 9 textile specimens is an example of the trade between India and Europe during the 17th to 19th centuries. Large quantities of textiles were created especially for the export markets, where they were high fashion among the European bourgeoisie.

The specimens are samples delivered to Danish customs authorities to verify their value and to assess the tariffs to be levied. They represent a wide variety of everyday textiles for clothing. Many of the samples look as if they might have been created today, and indeed a lot of the patterns still exist among Indian block-printers and weavers. These textiles and the other Indian textiles being traded in Denmark have had a huge influence on Danish textile production and design, and a many of the patterns can be found reinterpreted, consciously or unconsciously, in the exhibited pieces.

no. (2) (see map center fold)

Marie Gudme Leth

1895 – 1997
Copenhagen, Denmark

मेरी गुडमे लेथ

1895 - 1997
कोपनहेगन, डेनमार्क।

मेरी गुडमे लेथ डेनमार्क की एक राष्ट्रीय धरोहर है जहाँ उन्होंने वर्ष 1920 में कलात्मक शिल्प के रूप में वस्त्र प्रिंटिंग की पुनः शुरुआत की। उनके पैटर्न बेहद लोकप्रिय थे, विशेषकर पर्दे, चाय के तौलिये या घरेलू उपयोग की अन्य वस्तुओं के रूप में, और उनके समकालीन डेनिश आधुनिक आंदोलन डिजाइनरों के साथ उनकी प्रशंसा की गई। आज उन्हें इन आधुनिकतावादी फर्नीचर डिजाइनरों की तरह व्यापक रूप से नहीं जाना जाता है- चूंकि वस्त्र डिजाइन " स्त्री के माध्यम " के रूप में अपने अर्थों के कारण भी पारंपरिक रूप से, डिजाइन के पदानुक्रम में निचले स्थान पर है। अब इस दृष्टिकोण में बदलाव हो रहा है और उन्होंने वस्त्र डिजाइनरों की कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है जो उनका अनुसरण करते हैं। उनमें से कुछ इस प्रदर्शनी में अन्यत्र प्रदर्शित हैं।

उनके कार्यों को डेनमार्क और विदेशों में प्रदर्शित किया गया है। उन्होंने 1937 में एक्स्पोजिशन इंटरनेशनल, पेरिस और 1951 में ट्रियनाले, मिलान में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उनके जीवंत रंगों और सजावटी पैटर्न ने उस समय के प्रचलित दृश्य को और अधिक अद्भुत विकल्प प्रदान किया।

गुडमे लेथ अपने पैटर्न में विदेशी संस्कृतियों से प्रेरित थी, इसका एक उदाहरण कालीकॉट 1947 का पैटर्न है जिसमें हाथियों और ऊँटों को प्रदर्शित किया गया है जिससे उनका सामना बर्मा की लंबी यात्रा के दौरान हुआ था। उनके ज्यामितीय पैटर्न में, भारतीय ब्लॉक-प्रिंटिंग से ली गई प्रेरणा स्पष्ट दिखाई देती है।

Marie Gudme Leth is a national treasure in Denmark where she re-introduced textile printing as an artisanal craft in the 1920s. Her patterns were extremely popular, especially as curtains, tea towels or other household items, and she was praised along with her contemporaries, the designers of the Danish Modern movement. Today she is not as widely known as these modernist furniture designers – textile design traditionally has ranked lower in the hierarchy of design, also due to its connotations as being a “feminine” medium. Now this is changing, and she has inspired several of the generations of textile designers that followed her. A few of them on display elsewhere in this exhibition.

Her works were exhibited in Denmark and abroad. She received a gold medal at the Exposition Internationale in Paris in 1937 and at the Triennale in Milano in 1951. During the Second World War her vivid colors and decorative patterns offered a more whimsical alternative to the prevailing vision of the period.

Gudme Leth was inspired by foreign cultures in her patterns, an example being the pattern [title lacking] that shows elephants and camels which she encountered on a single long travel to Burma. In her geometrical patterns, the inspiration from Indian block-printing seems evident.

no. 3 (see map center fold)

Bitten Hegelund

Born 1960
Lives and works in Raadvad, Denmark

बिट्टन हेगलण्ड

जन्म 1960
कोपनहेगन, डेनमार्क में निवास और कार्य।

Blocks, 2012
Handprinted w. reactive dyes & resist (gum Arabic)
6 samples on the table 1 larger piece hanging above table

ब्लॉक-हस्त प्रिंट. प्रतिक्रियाशील डाई एंड रेजिस्ट (अरबी गोंद), 2012
टेबल पर 6 नमूने
टेबल के ऊपर एक बड़ी कलाकृति

एक युवा वस्त्र डिज़ानर के रूप में बिट्टन हेगलण्ड ने वस्त्र प्रिंटर मेरी गुडमे लेथ को (समीपवर्ती टेबल पर प्रदर्शित) पत्र लिखा जो उस समय बुज़र्ग महिला रही होगी, जिसमें हेगलण्ड ने इस राष्ट्रीय धरोहर के कार्य के लिए अपनी गहरी प्रशंसा व्यक्त की।उन्हें एक सकारात्मक उत्तर मिला और उनके कुछ प्रिंट खरीदने की अनुमति दी गई।

शायद इसी ने हेगलण्ड को युवा वस्त्र डिजाइनरों की पीढ़ियों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रेरित किया, जैसे कि वह हर रोज,अपना कार्य करने के अलावा, रादवाद के अपने छोटे सुरम्य शहर से अपनी बाइक से रोयल अकादमी, कोपनहेगन जाती है जहाँ पढ़ाती है और वस्त्र लैब चलाती है।

हेगलण्ड प्रिंट और रंगों पर ध्यान देते हुए वस्त्र प्रिंटर के रूप में कार्य करती है। इन्होंने कई वर्षों तक भारत की यात्रा की है, जहाँ से अपने पैटर्न के लिए इन्हें प्रेरणा मिली है और इनके कार्य से जीवंत रंग उत्पन्न होते हैं।

Bitten Hegelund as a young textile designer wrote a letter to the textile printer Marie Gudme Leth (exhibited at the neighboring table) who at the time would have been an elderly lady, where Hegelund expressed her deep admiration for the work of this national treasure. She received an accommodating reply and was allowed to buy a few of her prints.

Perhaps this is what inspired Hegelund to train generations of younger textile designers, as she every day, aside from her own textile work, rides her bike from the small picturesque town of Raadvad to The Royal Academy in Copenhagen where she teaches and runs the textile lab.

Hegelund works as a textile printer with a focus on prints and dyes. She has travelled throughout India for many years, where the inspiration for her patterns and focus on vivid colors emanates from her work.

Anne Fabricius Møller

Born 1959
Lives and works in Copenhagen, Denmark

एन्न फेब्रीसिअस मोलर

जन्म 1959
कोपनहेगन, डेनमार्क में निवास और कार्य।

Fading Print (In My Window), 2005–
dyed and folded cotton

Fading Print (In Your Window), 2012
dyed and rolled cotton in acrylic casing

लुप्त होते प्रिंट (फेडिंग प्रिंट) (इन माय विंडो) रंगे एवं मोड़े हुए कॉटन, 2005
लुप्त होते प्रिंट (इन योर विंडो) एक्रिलिक आवरण में रंगे एवं मोड़े हुए कॉटन, 2012

एन्न फेब्रीसिअस मोलर, ने 1986 में वस्त्र डिज़ाइर के रूप में स्नातक करने के बाद से, वस्त्र के साथ काव्य के रूप में कार्य किया है लेकिन पुनरावृत्ति के प्रति अपने दृष्टकोण में वैज्ञानिक सटीकता और दृढ़ता के साथ। अपने वस्त्रों के अलावा, फेब्रीसिअस मोलर ने डेनमार्क में एक बड़े वस्त्र विनिर्मिता, क्वाड्रेट के लिए व्यावसायिक रूप से उपलब्ध वस्त्र डिज़ाइन किए है।

हालांकि,वस्त्र के कलात्मक परीक्षण एवम माध्यम के रूप में उसके प्रयोग के कारण उन्हें पुरस्कारों एवं उपलब्धियों की लंबी सूची प्राप्त हुई हैं। इस प्रदर्शनी में, फेब्रीसिअस मोलर के "फेडिंग प्रिंट" प्रदर्शित है यद्यपि "प्रिंट" शब्द का प्रयोग गलत हो सकता है। पैटर्न वस्त्रों के सूर्य के साथ होने वाले विरंजन से उभरते हैं जिसकी प्रेरणा उसने अपनी माँ के पर्दों से ली जो उनके कमरे की खिड़कियों के सामने वर्षों से लहरिया टंगे हुए हैं, जिन्हें एक लंबवत धारीदार प्रक्षालित पैटर्न के साथ छोड़ दिया गया था। फेब्रीसिअस मोलरके धुंधले प्रिंटों में अस्थायी पहलू भी निहित है, क्योंकि वे 10 वर्ष से अधिक वांछित धूप-प्रक्षालित स्तर तक पहुंचने के लिए दक्षिण की ओर मुड़े हुए हैं। टेबल पर ऐक्रेलिक केसिंग में, रंगे लपेटे एवं बंधे हुए टुकड़े हैं जो सूर्य के संपर्क के लिए तैयार हैं।

अपने वस्त्रोंके साथ कार्य करने के अलावा, फेब्रीसिअस मोलर सेंट्रल कोपनहेगन में तैयार वस्त्रों के लिए प्रदर्शनी का संचालन भी करती है, जो गैलेरी शॉ के माध्यम से समकालीन कारीगरों और डिजाइनरों की श्रृंखला से वस्त्र शिल्प का प्रदर्शन कराते हैं जिसका स्थानीय डेनीश डिजाइन दृश्य पर गहरा प्रभाव है

Anne Fabricius Møller, since graduating as a textile designer in 1986, has worked with textiles as poetry. But with a scientific precision and perseverance in her approach to repetition. Beside her one-off pieces Fabricius Møller has also designed commercially available textiles for Kvadrat, one of the big textile manufacturers in Denmark.

It is however her artistic trials and experiments of textile as a medium that has earned her a long list of awards and achievements. In this exhibition Fabricius Møller's "Fading Prints" are on display, although "print" might be the wrong term. The patterns emerge from the sun's bleaching of the textiles, inspired by her mother's curtains that after years and years of hanging pleated in front of her living room windows, were left with a vertically striped bleached pattern. Fabricius Møller's faded prints also contain this temporal aspect, as they take upwards of 10 years of lying folded in a South-facing window sill to reach the desired sun-bleached level. In the acrylic casings on the table, dyed, rolled and tied pieces are displayed, ready for sun exposure.

Aside from working with her own texitles, Fabricius Møller also runs an exhibition space for textiles in central Copenhagen, which through gallery shows showcases textile craft from a range of contemporary artisans and designers, having a great impact on the local Danish design scene.

no. 5 (see map center fold)

Vibeke Rohland

Born 1957
Lives and works in Copenhagen, Denmark

विबेके रोहलैंड

जन्म 1957
कोपनहेगन, डेनमार्क में निवास और कार्य।

ERASURE / 3 works, 2020
Velvet, discharge
Created at The Danish Art Workshops

इरेसर/ 3 कार्य
मखमल, रिहाई (डिस्चार्ज)।
डैनिश कला कार्यशाला, 2020 में निर्मित।

विबेके रोहलैंड एक स्वयं वर्णित “पंक वस्त्र डिज़ाइनर” हैं जिन्होंने 1980 से शिल्प,डिज़ाइन और कला के मध्य क्रम व्यवस्थाओं को तोड़ते हुए कार्य किया है।

तीन प्रदर्शित कार्य शीर्षक इरेसर की श्रृंखला के अंग हैं जहां मख़मल के बड़े टुकड़ों को निखारा जाता है। शीर्षक के अनुरूप, कुछ चीजों को प्रकट दिखाने के लिए, अन्य को विलुप्त होना पड़ता है। यह शायद विध्वंसक संदेश हो सकता है, क्यूंकि कुलीन वर्ग हेतु धन प्रदर्शन के रूप में वस्त्रों के ऐतिहासिक महत्व में विबेके रोहलैंड की हमेशा से गहरी रुचि रही है।

मख़मल वस्त्र पर ब्लीचिंग एजेंट के छिड़ाकाव से, ये पैटर्न तारों वाली रात के आसमान के सदृश दिखाई देते हैं। प्रिंट-मेकिंग की यह पद्धति जहाँ पैटर्न का डिज़ाइन न ज्यामितीय न ही आलंकरिक मोटिफ़ रूपरेखा प्रस्तुत करते है, किंतु दूसरी ओर, विशेष अर्ध यादृच्छिक प्रक्रिया की योजना से उपजते हैं, सदियों के शिल्प ज्ञान का चित्रण करते हुए, रोहलैंड के कार्य को मज़बूती से वर्तमान में रखते है

Vibeke Rohland is a self-described “punk textile designer” who since the 1980s has worked on breaking down the hierarchies between craft, design and art.

The three exhibited pieces are parts of a series titled Erasure where large pieces of velvet are bleached. Judging from the title, something has to disappear for other things to emerge. Maybe there is a subversive message, as Rohland has always been highly interested in the historical significance of textiles as a display of wealth for the nobility.

By spraying a bleaching agent on the velvet fabrics, these patterns appear resembling starry night skies. This approach to print-making, where the design of a pattern lies not in sketching out geometrical or figurative motifs, but on the other hand stems from the planning of a specific semi-random process, situates Rohland’s work firmly in the present, while also drawing on centuries of knowledge of the craft.

no. 6 (see map center fold)

Vibeke Klint

1927–2019
Taarbæk, Denmark

विबेके क्लिन्ट

1927-2019
तारबेक, डेनमार्क

Winding Samples, 1950 – 2008

Water Colors, 1950 – 1970

घुमावदार नमूने (विंडिंग नमूने), 1950-2008
जल रंग, 1950-1970

विबेके क्लिंट ने अपने समय के एक प्रभावशाली शैली-निर्माता होने के नाते डेनिश वस्त्र डिजाइन दृश्य पर एक महत्वपूर्ण छाप छोड़ी है। उनके द्वारा बनाए गए वस्त्र डिजाईन में घर में इस्तेमाल होनेवाले सादगीपूर्ण वस्त्रों से लेकर प्रभावशाली,विस्तृत पैमाने पर सार्वजनिक कला परियोजनाओं तक के वस्त्र शामिल हैं।

क्लिंट 20वीं सदी के मध्य से लेकर डेनिश आधुनिक आंदोलन की सदस्य थी और उनके डिजाइनों की विशेषता उसकी सादगी में है , उन्होंने बुनाई के इतिहास से प्रेरणा लेते हुए अपने विशेष कौशल का चित्रण किया है।उसके पैटर्न अक्सर केवल रेखाएं, तीव्र कोण, या घुमावदार किनारे होते हैं। इन सरल पैटर्न को उनके द्वारा रंगों के परिष्कृत और अक्सर आश्चर्यजनक उपयोग के माध्यम से जीवंत बनाया गया है।

वास्तव में यह एक ही समय में परंपरा को गहराई से जानने और एक नए युग के लिए अभिव्यक्ति को पुनर्जीवित करने में सक्षम होने के बीच संतुलन साधने का कार्य है जिसके कारण वह अपने समकालीन फर्नीचर डिजाइनरों के बीच लोकप्रिय भी हुई, जो अक्सर उन्हें अपनी प्रदर्शनियों में शामिल करते थे।

विबेके क्लिंट को डेनमार्क में एक वस्त्र डिजाइनर को प्रदान किए जाने वाले सभी बड़े पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस प्रदर्शनी में उन्हें अपने साधारण "घुमावदार नमूने" के एक बड़े संग्रह के माध्यम से दर्शाया गया है, जो उनकी डिजाइन पद्धति की एक झलक प्रदान करते हैं। इन नमूनों का उपयोग रचनाओं और रंगों के परीक्षण के रूप में किया गया जो एक नए गलीचे के लिए पहला रेखांकन होगा।

इसके अतिरिक्त गलीचे पैटर्न के लिए अंतिम डिजाइन दर्शाते हुए क्लिंट के पानी के रंगों का एक छोटा सा सेट यहाँ प्रदर्शित है।

Vibeke Klint left a significant impression on the Danish textile design scene, as well as being an influential taste-maker in her time. Her works span from humble textiles for the home to impressive, large-scale public arts projects.

Klint was a member of the Danish Modern movement from the mid-20th century and onwards, and her designs are characterized by an immense simplicity, a sort of minimalism but using inspirations from the history of weaving while drawing on her highly specialised skillset. Her patterns are often mere lines, acute angles, or a meander border. These simple patterns are brought to life through her refined and often surprising use of colors.

Exactly this balancing act between knowing tradition intimately while at the same time being able to revitalise the expression for a new era also made her popular among her contemporary furniture designers, who often included her in their exhibitions.

Vibeke Klint received all of the biggest prizes awarded to a textile designer in Denmark. In this exhibition she is represented by a larger collection of her modest "Winding Samples", which provide an insight into her design method. These samples were used as tests for compositions and color and would be the first sketch for a new rug.

Additionally a small set of Klint's water colors showing the finished design for her rug patterns are on display here.

1. Archive Specimens
2. Marie Gudme Leth
3. Bitten Hegelund
4. Anne Fabricius Møller
5. Vibeke Rohland
6. Vibeke Klint
7. Jan Machenhauer
8. Margrethe Odgaard
9. Ebbe Stub-Wittrup
10. Malene Bach
11. Ragna Braase
12. Freya Dalsjø
13. Paula Trock
14. Hanne Vedel

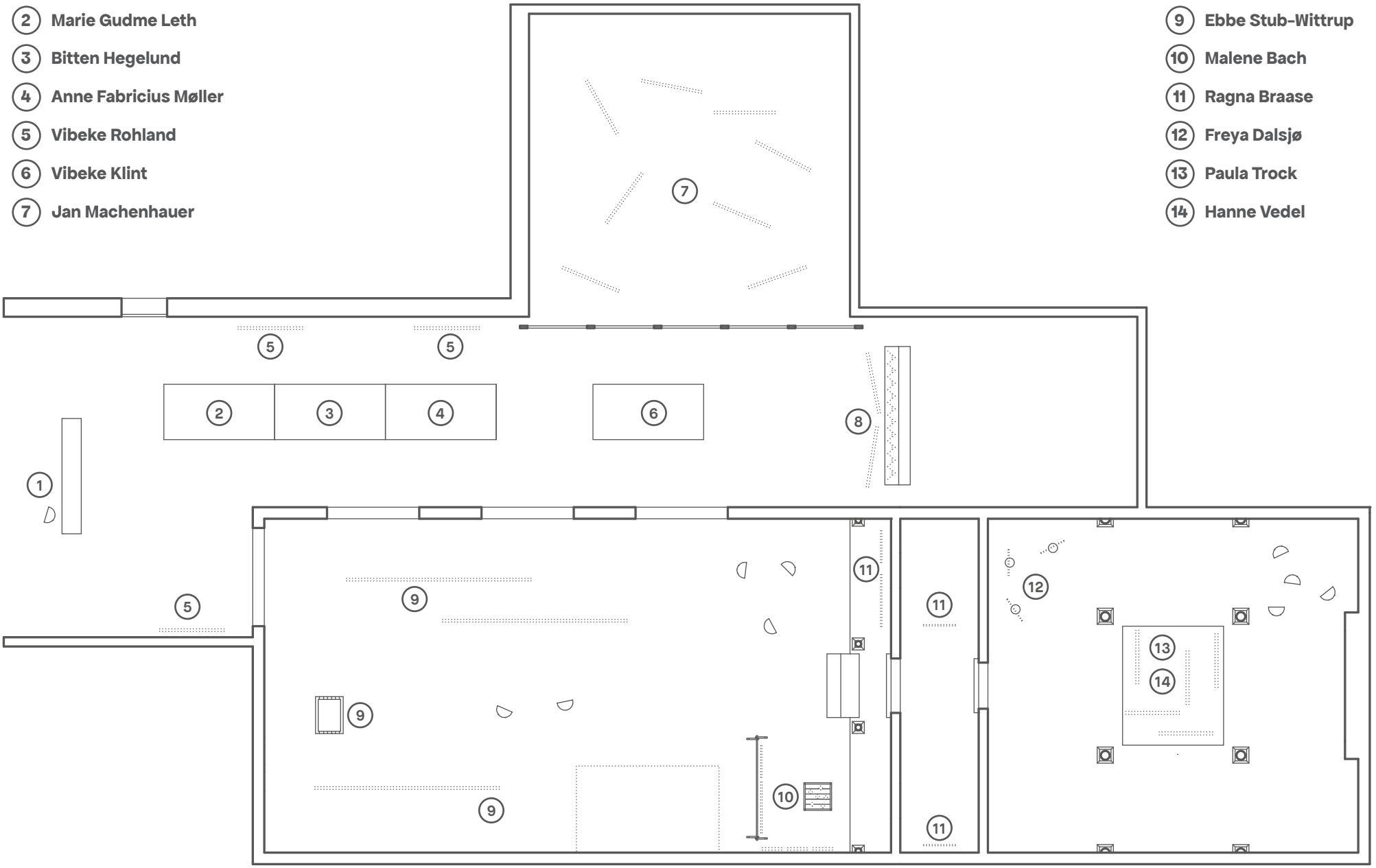

no. 7 (see map center fold)

Jan Machenhauer

Born 1954
Lives and works in Copenhagen, Denmark

जन मैकेनहाउर

जन्म 1954
कोपेनहेगेन, डेनमार्क में निवास और कार्य

समान्यतः फैशन बदलते रुझानों का पर्याय है, लेकिन जन मैकेनहाउर के लिए नहीं, जो भौतिकता और शिल्प की निरंतर खोज में अपनी ही सहज प्रवृत्ति का पालन करते हैं।यही कारण है कि मैकेनहाउरने अपने कई संकलनों को तैयार करने के लिए स्थानीय शिल्पकारों के साथ कार्य करते हुए हर वर्ष में कई महीने भारत में बिताए हैं।

मैकेनहाउर ने 1980 के दशक में पेरिस में फ्रांसीसी फैशन दृश्य में जापानी प्रवाह के दौरान काम किया- इस्सी मियाके, योहजी यामामोटो और री कावाकुबो इस आंदोलन के उदाहरण हैं - और उनके कार्य में भी उसी प्रकार की बारीकी एवम संरचना पर ध्यान स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

इस प्रदर्शनी के लिए तीन अलग-अलग श्रृंखलाएं प्रदर्शित हैं।

पहला उनके 1998 संकलन से भारतीय पैटर्न और वस्त्रों से प्रत्यक्ष प्रेरणा पर आधारित परिधानों की एक श्रृंखला है।

इससे आगे 2022 का संकलन है जो पूरी तरह से नए डिजाइनों को प्रदर्शित करता है, जो यह साबित करता है कि प्रेरणा के प्रति यह दृष्टिकोण अभी भी कितना जीवंत है। उनके डिजाइन स्थानीय भारतीय शिल्पकारों के साथ घनिष्ठ सहयोग के माध्यम से विकसित किए गए हैं और यह उन संभावनाओं की निरंतर खोज है जो इसे विकसित करने और लंबे समय तक मिलकर कार्य करने की पेशकश करते हैं।

Normally fashion is synonymous with shifting trends, but not for Jan Machenhauer who follows his own instincts in a continued exploration of materiality and craft. This is the reason for Machenhauer spending several months in India each year working with local craftspeople to develop his multiple collections.

Machenhauer worked in Paris in the 1980s during the Japanese influx to the French fashion scene– Issey Miyake, Yohji Yamamoto and Rei Kawakubo being examples of this movement – and the same precision and focus on composition seem evident in his work.

For this exhibition two different series are on display.

The first is a range of outfits from his 1998 collection drawing on direct inspirations from Indian patterns and textiles.

Next to that are examples of more recent work showcasing completely new designs, proving how this approach to inspiration is still very much alive. His designs are developed through a close collaboration with local Indian craftspeople and it is a continued exploration of the possibilities it offers to develop and work together for a long stretch of time.

Margrethe Odgaard

Born 1978
Lives and works in Elsinore and Copenhagen, Denmark

मार्ग्रेथ ओडगार्ड

जन्म 1978
एल्सिनोर और कोपेनहेगेन, डेनमार्क में निवास और कार्य

Color Diary India, 2022

Mallick Ghat, 2022

कलर डायरी इंडिया, 2022
मल्लिक घाट, 2022

मार्ग्रेथ ओडगार्ड रंगों के साथ कार्य करती हैं। लेकिन रंग केवल रंग नहीं बल्कि ये किसी सामग्री या माध्यम पर निर्भर करते हैं। और वास्तव में यह रंग और माध्यम के बीच का संबंध है जिसे ओडगार्ड अपने वस्त्र कार्य के माध्यम से खोजते हैं। वर्ष 2005 में डेनमार्क के डिज़ाइन स्कूल से स्नातक करने के बाद उन्होंने अमेरिका और फ्रांस दोनों जगह कार्य किया, लेकिन अब वह डेनमार्क में रहते हैं।

वर्क कलर डायरी में उन्होंने भारत की अपनी यात्रा के माध्यम से रंगीन छापें एकत्र की हैं। वह विशिष्ट स्थानों से प्राप्त इन छापों के चूर्ण को छोटे छोटे पैकेट में संग्रहित करती हैं। ये डायरियाँ उनके संग्रह का एक हिस्सा हैं जो उनके निरंतर कार्य और रंगों के अनुप्रयोग का आधार है।

तैरते हुए पारदर्शी वस्त्र, मल्लिक घाट, विशेष रूप से प्रदर्शनी के लिए बनाए गए हैं और भारत में एकत्रित कच्चे रंग द्रव्य की ठोस रचनाएं हैं। वे इस बात का एक उदाहरण हैं कि कैसे छापों की रंग और भौतिकता के रूप में पुनर्व्याख्या की जाती है।

Margrethe Odgaard works with colors. But colors are never just that, they alway rely on a material or a medium. And it is exactly this relationship between color and medium which Odgaard explores through her textile work. After graduating from Denmark's Design School in 2005 she has worked in both USA and France, but is now based in Denmark.

In the work Color Diary she has collected color impressions from her travels through India. In small pockets she archives the powdered essences of these impressions gleaned from specific places. The diaries are a part of her archive which represents the backbone of her continued work and application of colors.

The floating transparent textiles, Mallick Ghat, have been created specifically for the exhibition and are concrete compositions of raw pigments collected in India. They are an example of how impressions are reinterpreted as colors and materiality.

no. 9 (see map center fold)

Ebbe Stub Wittrup

Born 1973
Lives and works in Copenhagen, Denmark

एब्बे स्टब विटरप

जन्म1973
कोपेनहेगन, डेनमार्क में निवास एवं कार्य।

Botanical Drift, 2020
Three banners colored with Indigo, Madder and Cutch

Photographs of botanical archive printed on newspaper

वानस्पतिक बहाव (बोटेनिकल ड्रिफ्ट), 2020
इंडिगो, मैडर और कच से रंगे तीन बैनर
समाचार पत्र पर छपे वानस्पतिक पुरालेख की तस्वीरें।

बोटेनिकल ड्रिफ्ट परियोजना में,कलाकार एब्बे स्टब विटरप राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक स्वामित्व के मुद्दे को संबोधित करते हैं। कलाकार द्वारा डेनिश वनस्पतिशास्त्री नथानिएल वालिच के नक्शेकदम पर चलते हुए,पश्चिमी अर्थव्यवस्था और वैज्ञानिक तर्क पर एक कथानक उभरता है जो स्थानीय ज्ञान और अनुभव के विपरीत है

एब्बे स्टब विटरप ने इस प्रदर्शनी के लिए चार्लोटनलुंड,कोपेनहेगन में फोर्स्टबोटनिस्क हैव (अर्बोरेटम), जो पिनस वालिचिआना नामक विचित्र वृक्ष का घर है ,से प्रेरणा ली । वृक्ष का नाम डेनिश वनस्पतिशास्त्री नथानिएल वालिचो (1786-1854)के नाम पर रखा गया है जो 1807 में भारत में डेनिश - बाद में ब्रिटिश -उपनिवेश सेरामपुर में तैनात थे। यहां,वालिच ने स्थानीय पौधों को इकट्ठा करने तथा स्वीडिश वनस्पतिशास्त्री कार्ल वॉन लिने, जिन्होंने पीढ़ी और प्रजातियों की एक प्रणाली स्थापित की थी,जिसका उपयोग दुनिया के सभी पौधों को वर्गीकृत करने के लिए किया जा सकता था,के समकालीन उदाहरण के अनुसार उन्हें वर्गीकृत करने , का व्यापक कार्य शुरू किया। भारतीय वनस्पतियों से एकत्रित नमूनों का वर्णन, मुद्रणऔर कागजों पर प्रलेखन कर उन्हें पूरे यूरोप के वनस्पति उद्यानों में वितरित किया गया ।

भारतीय वनस्पतियों के वनस्पतिक रंगों से रंगे तीन बड़े पैमाने के वस्त्र बैनर छत से लटके हुए हैं । स्थानीय पौधों से निकाले गए रंग वर्णक के उपयोग ने सदियों से दुनिया भर में मिथकों,परंपराओं और आध्यात्मिक संस्कारों के उद्भव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये झंडे राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पहचान पर प्रश्नों को संबोधित करते हुए प्रदर्शनी के ऊपर प्रादेशिक चिन्हकों (मार्करों) की तरह उड़ते हैं ।

वनस्पतिशास्त्री नथानिएल वालिच के संग्रह से पत्रकों को दर्शाने वाले पोस्टरों को फर्श पर प्रदर्शित किया गया है तथा हर किसी को इनमे से एक को घर ले जाने हेतु न्योता देता है।

In the project Botanical Drift, the artist Ebbe Stub Wittrup addresses national identity and cultural ownership. As the artist follows in the footsteps of the Danish botanist Nathaniel Wallich, a narrative emerges on Western economy and scientific logic as opposed to local knowledge and experience.

Ebbe Stub Wittrup took inspiration for the exhibition from the Forstbotanisk Have (Arboretum) in Charlottenlund, Copenhagen, home to a tree with the strange name of Pinus wallichiana. The tree is named after, and by, the Danish botanist Nathaniel Wallich (1786–1854), who was stationed in the Danish – later British – colony Serampore in India in 1807. Here, Wallich began the comprehensive task of collecting local plants and classifying it according to the contemporary example, the Swedish botanist Carl von Linné, who had set out a system of genera and species, which could be used to classify all the world's plants. The collected specimens from the Indian flora was described, pressed, and documented on sheets of paper distributed to botanical gardens throughout Europe.

Three large-scale textile banners coloured with vegetable dyes from the Indian flora extend from the ceiling. Using colour pigment extracted from local plants has for millennia, played a key role in the emergence of myths, traditions, and spiritual rites worldwide. The flags fly like territorial markers above the exhibition, addressing questions on national and cultural identity.

The posters showing the sheets from the archive botanist Nathaniel Wallich is displayed on the floor and everyone is invited to take one to bring home.

no. (10) (see map center fold)

Malene Bach

Born 1967
Lives and works in Præstø, Denmark

मालेन बाख

जन्म1967
प्रेस्टो, डेनमार्क में निवास एवं कार्य।

6 Icons, 2022
Pigments and linseed oil wax on teak

Pigment samples, 2022

Textile samples, 2020

सागौन पर रंगद्रव्य और अलसी के तेल के मोम में 6 चिह्न, 2022
रंजक नमूने, 2022
वस्त्र के नमूने, 2020

मालेन बाख विशेष रूप से वास्तुशिल्प हस्तक्षेप और रंग योजनाओं के साथ साइट पर काम करती है। अपने रंग कार्यों के माध्यम से वह वास्तुकला के मौलिक मुद्दों जैसे पैमाने,भौतिकता,कार्य और आभूषण के बारे में प्रश्न पूछने में सक्षम है।

एक मानवविज्ञानी की तरह वह अन्य संस्कृतियों और परंपराओं की खोज करती है और स्थानीय शिल्पकारों, कलाकारों और वास्तुकारों के साथ संवाद और सहयोगात्मक प्रयास से अपने काम को अंजाम देती है। इस प्रकार के सहयोग का चरित्र प्रायः प्रदर्शनकारी होता है,जिससे यह समझना मुश्किल हो जाता है कि वास्तविक कार्य क्या है और इसके पीछे होने वाली कलात्मक प्रक्रिया के भौतिक अवशेष क्या हैं।

बाख ने कई वर्षों तक भारत में काम किया है और स्थानीय परंपराओं और शिल्प में उनकी अत्यधिक रुचि है। भारत के कुछ सबसे व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त वास्तुकारों के साथ मिल कर उन्होंने घरों और संस्थानों के लिए साइट-विशिष्ट कार्यों का निर्माण किया है।

यहां प्रदर्शित लकड़ी के चिह्न दिखाते हैं कि वह रंग और संरचना के साथ कैसे काम करती है।रंग का यह उपयोग रंगद्रव्य और वस्त्रों के साथ उनके काम से उपजा है, और भारतीय वस्त्रों पर शोध के माध्यम सेउन्होंने सीखा कि कैसे दो अलग-अलग रंग के धागों में कंपन होता है और उन्हें एक साथ बुने जाने पर एक बिल्कुल नया और कभी-कभी अप्रत्याशित रंग बन सकता है। सामग्री और अनुप्रयोग के माध्यम से भी रंगों ने मध्यस्थता की है। इस वजह से उनके टेक्सटाइल डिजाइन नमूने एवम भारतीय रंगद्रव्य संग्रह में लकड़ी के पैनल चित्रों के साथ हैं।व्यक्तिगत परिणामी टुकड़ों से अधिक,यह खोज स्वयं का कार्य है।

Malene Bach works site-specifically with architectural interventions and color schemes. Through her color work she is able to pose questions about fundamental architectural issues, such as scale, materiality, function and ornament.

Like an anthropologist she explores other cultures and tradtions and creates works in a dialog and collaborative effort with local craftspeople, artists and architects. Often these collaborations have an almost performative character, making it difficult to decipher what is the actual work and what are just the physical remains of the artistic process behind it.

Bach has worked in India for many years and is immensely interested in local traditions and crafts. Together with some of the most widely recognized architects of India she has created site-specific works for houses and institutions.

The wooden icons on display here show how she works with color and composition. The use of color stems from her work with pigments and textiles, and it is through her research of Indian textiles that she learned how two differently colored threads will vibrate and create an entirely new and sometimes unexpected color when woven together. Colors are also mediated through their material and application. For this reason her textile design samples and archive of Indian pigments are accompanying the wood panel paintings. The exploration, more than the individual resulting pieces, is the work in and of itself.

no. (11) (see map center fold)

Ragna Braase

1929–2013
Lived and worked in Copenhagen, Denmark and Paris, France

रग्ना ब्रासे

1929-2013

कोपेनहेगन, डेनमार्क और पेरिस, फ्रांस में निवास एवं कार्य।

Moths, 1978
Untitled, 1970s
Tile, 1978
Untitled, 1970s

मोथ, 1978
शीर्षकहीन, 1970
टाइल, 1978
शीर्षकहीन, 1970

रग्ना ब्रासे ने कई कलात्मक विधाओं के मध्य कार्य किया है और अपनी पीढ़ी के अन्यों के समान उन्होंने वास्तुकला, शिल्प,डिजाइन और कला के शास्त्रीय भेदों के बीच की रेखाओं को कम करने की कोशिश की है।

एक माध्यम के रूप में वस्त्र का चुनाव और उसे "ललित कला" ("शिल्प" के विपरीत) कहना उस समय की परिष्कृतता की डिग्री के आधार पर कलात्मक शैलियों की रैंकिंग के प्रचलित विचारों के खिलाफ विद्रोह के रूप में देखा गया, जिसके परिणामस्वरूप विशेष रूप से पुरुष प्रधान विषयों को "ललित कला" के रूप में और महिला प्रधान विषयों को "हस्तशिल्प" के रूप में देखा गया।

रग्ना ब्रासे ने सन 1953 में पेरिस में ललित कला अकादमी से और बाद में सन1957 में रॉयल डेनिश एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। 1968 में वह अपने पति, मूर्तिकार इब ब्रासे और उनके दो बच्चों के साथ कोपेनहेगन से पेरिस के 25 किमी दक्षिण में फ्रांसीसी गांव मार्कौसिस चली गईं।यहां उन्होंने आसानी से उपलब्ध होने वाली सामग्री से अपना घर बनाया और ऊपरी मंजिल पर रहते हुए भूतल को अपने साझा स्टूडियो के स्थान में बदल दिया। उसी समय वे पेरिस के कला परिदृश्य का हिस्सा बन गई ।

प्रदर्शित चारों टुकड़े 1970 के दशक के दौरान फ्रांस में ब्रासे के समय के हैं। उनके स्व-निर्मित घर में उन्होंने अपना करघा भी स्वयं बनाया और अपना सूत भी खुद काता। शिल्प को फिर से सीखने और आत्म-निर्भर तरीके से जीने के नए शौक की उत्पति एक ऐसा विचार है जो हमारे वर्तमान समय में एक बार फिर काफी प्रासंगिक हैं।

रग्ना ब्रासे के रंगीन बुने हुए टुकड़े मध्य पूर्वी और इस्लामिक दुनिया से प्रेरित हैं, जबकि वे स्वयं कभी दुनिया के इस हिस्से में नहीं गई। वे एक अंतरंग और घरेलू भावना से ओत-प्रोत हैं, साथ ही वे कहीं बहुत दूर एक अनिर्दिष्ट स्थान पर एक बड़ी दुनिया की लालसा की ओर इशारा करते हैं।

Ragna Braase worked in the intersection between several artistic genres and like others in her generation she sought to blur the lines between the classical distinctions of architecture, craft, design and art. The choice of textile as a medium and calling it "fine art" (as opposed to "craft") can be seen as a revolt against the prevailing ideas of ranking the artistic genres by degrees of refinedness at the time, often resulting in the typically male disciplines being seen as "fine art" and the typically female disciplines as "handicraft".

Ragna Braase graduated from the academy of fine arts in Paris in 1953 and later from The Royal Danish Academy of Fine Arts in 1957. In 1968 she moved from Copenhagen to the French village of Marcoussis 25km South of Paris with her husband, sculptor Ib Braase and their two children. Here they built their own house from simple available materials and turned the ground floor into their shared studio space while living upstairs. At the same time they became a part of the Parisian art scene.

The four pieces on display are all from Braase's time in France during the 1970s. In the self-built house she also constructed her own loom and spun her own yarns. The newfound interest at the time of relearning crafts and living self-sustainably off the land are ideas that once again in our present day have found considerable relevance.

Ragna Braase's colorful woven pieces draw on inspirations from the Middle Eastern and Islamic world, despite her never having visited this part of the world. They carry an intimate and domestic feeling, while at the same time alluding to a longing for a greater world some unspecified place far away.

no. (12) (see map center fold)

Freya Dalsjø

Born 1989
Lives and works in Copenhagen, Denmark

फ्रेया दल्सजो

जन्म 1989
कोपेनहेगेन, डेनमार्क में निवास और कार्य

3 Dresses, 2022
Silk

3 कपड़े, 2022
रेशम

फ्रेया दल्सजो उत्कृष्ट फैशन शिल्पशाला तकनीकों और अपेक्षाकृत उत्तम सामग्रियों के साथ काम करती हैं। लेकिन उनकी डिजाइन भाषा मानदंडों को चुनौती देती है और फैशन के विचार पर ही प्रश्न उठाती हैं।

उनके सौंदर्यशास्त्र को न्यूनतम या वैचारिक रूप में देखा जा सकता है, लेकिन उनकी सामग्री परिष्कृत और कभी-कभी पतनशील होती हैं।

प्रदर्शनी में दिखाए गए तीनों परिधानों में एक चित्रात्मक गुणवत्ता है।पारदर्शी क्षेत्रों को कपड़े से सीधे काटा जाता है जो निर्माण और विघटन को संतुलित करते हुए मूर्तिकला की गुणवत्ता प्रदान करने वाली अत्याधुनिक अभिव्यक्ति है।

दल्सजो ने वर्ष 2012 में कोपेनहेगेन फैशन सप्ताह में अपने पहले संकलन के साथ शुरुआत की। उन्होंने एंटवर्प (2009-10) में रॉयल अकादमी में अध्ययन किया है और फैशन और टेक्सटाइल में अपने काम के लिए प्रशंसा प्राप्त की है। उन्होंनें डिजाइन संग्रहालय डेनमार्क और मिलान में सेलोन डेल मोबाइल में भी प्रदर्शन किया है।

Freya Dalsjø works with classic fashion atelier techniques and with relatively classic materials. But her design language challenges norms and questions the idea of fashion itself.

Her aesthetic can be seen as minimalist or conceptual, but the materials are refined and sometimes even decadent.

The three outfits represented in the exhibition all share a graphical quality. The transparent fields are cut directly from the fabric lending a sculptural quality and an almost futuristic expression balancing construction and deconstruction.

Dalsjø debuted with her first collection in 2012 where she opened Copenhagen Fashion Week. She has studied at the Royal Academy in Antwerp (2009-10) and received acclaim for her work with fashion and textile. She has also exhibited at Designmuseum Danmark and Salone del Mobile in Milan.

no. 13 (see map center fold)

Paula Trock

1889–1979
From Southern Jutland, Denmark

पाउला ट्रॉक

1889-1979
दक्षिणी जटलेंड, डेनमार्क

The Gold Medal Curtain from the Milan Triennale, 1957
The UN Curtain, 1951

मिलन ट्रियानाले, 1957 से स्वर्ण पदक पर्दे
संयुक्त राष्ट्र पर्दे, 1951

पाउला ट्रॉक ने स्वीडन, फिनलेंड और इंगलेंड, जहाँ से उन्होंने उस समय के डिज़ाइन रुझानों के बारे में सीखा, में एक लंबी अध्ययन यात्रा के बाद, वर्ष 1928 में दक्षिणी डेनमार्क में अपनी खुद की बुनकर अकादमी की स्थापना की।

उन्होनें वर्ष 1948 में स्पिंडेगार्डेन ("कताई यार्ड") स्थापित किया जो डिज़ाइनरों की एक श्रृंखला के लिए एक प्रयोगशाला बन गई, जहाँ उन्हें नए तंतुओं की कताई का प्रयोग करने और उस समय की नवीन रंगाई तकनीकों का उपयोग करने की अनुमति थी।

ट्रॉक को प्रतिष्ठित पुरस्कारों की श्रृंखला से सम्मानित किया गया जिनमें टेक्सटाइल फॉर द रॉयल याच डेनब्रोग और मर्सेलिस्ब्रोग केसल शामिल हैं। उन्होंने मिलन ट्रियानाले में तीन बार स्वर्ण पदक जीता। इन स्वर्ण पदक विजेता टुकड़ों में से एक को प्रदर्शनी में शामिल किया गया है और यह उस समय तक अज्ञात सामग्री जैसे सेलोफेन के साथ उसके प्रयोगों का एक उदाहरण है,जो पर्दे में एक पारदर्शी रिलीफ-कार्य का प्रभाव देता है।

प्रदर्शित दूसरा टुकड़ा संयुक्त राष्ट्र का पर्दा है जो उन्होंने वर्ष 1951 में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय के लिए एक कमीशन के रूप में किया था, जिसे ऑस्कर निमेयर और ले कॉर्बूसियर द्वारा डिजाइन किया गया था,और जिसके लिए इनके साथी डेन, फर्नीचर डिज़ाइनर फिन जुहल ने बड़े काउंसिल चैंबर को डिजाइन किया था जहाँ इनके पर्दों का प्रयोग किया जाता था।

इनकी कार्यशाला स्पिंडेगार्डन को वर्ष 1970 में हेने वेडेल को तब सौंप दिया गया था, जब यह आबेनरा में स्थानांतरित हो गया था। पाउला ट्रॉक और हैने वेडेल को एक दूसरे के साथ प्रदर्शित किया गया है।

Paula Trock founded her own weaver's academy in Southern Denmark in 1928 after a long study trip to Sweden, Finland and England where she learned about the design trends of the time.

In 1948 she established Spindegården ("The Spinning Yard") which became a laboratory for a range of designers who were allowed to experiment with spinning the new fibers and using the novel dyeing techniques of the time.

Trock was awarded a series of prestigious commissions, among them textiles for the Royal Yacht Dannebrog and Marselisborg Castle. At the Triennale in Milan she won a gold medal three times. One of these gold medal pieces is included in the exhibtion and it is an example of her experiments with until then unknown materials such as cellophane, which allows for a transparent relief-work effect in the curtain.

The other exhibited piece is the UN Curtain which she did in 1951 as a commission for the UN Headquarters in New York, designed by Oscar Niemeyer and Le Corbusier, and for which her fellow Dane, furniture designer Finn Juhl, designed the large Council Chamber where her curtains were used.

Her workshop, Spindegården, was passed on to Hanne Vedel in 1970, at which point it moved to Aabenraa. Paula Trock and Hanne Vedel are exhibited alongside each other.

Hanne Vedel

Born 1933
Lives and works in Aabenraa, Denmark

हैने वेडेल

जन्म 1933,आबेनरा
डेनमार्क में निवास और कार्य

Sculptural curtain, wool and silk, undated
Sculptural curtain with large checkers, wool, undated
Tapestry in linen, silk and brass, undated

मूर्तिकला पर्दा, ऊन और रेशम, अदिनांकित
बड़े चेकर्स और ऊन के साथ मूर्तिकला पर्दा, अदिनांकित
लिनन, रेशम और पीतल में टेपेस्ट्री, अदिनांकित

हैने वेडेल ने बेहतरीन गुणवत्ता वाले कच्चे माल के साथ काम किया है, चाहे वह ऊन, लिनन या रेशम हो। इन्हें मोटे धागों में काता जाता है जो अन्यथा परिष्कृत वस्त्रों को एक विशिष्ट खुरदरी बनावट प्रदान करता है। वह सौम्य रंगों का उपयोग करती हैं जो भौतिकता और उष्णता को जोड़ने के लिए डिज़ाइन किए गए रिक्त स्थानों के अधीन होते हैं।

वेडेल की कार्यशाला स्पिंडेगार्डन (पाउला ट्रॉक भी देखें) और कोल्डिंग डिजाइन स्कूल में अपने शिक्षण के माध्यम से, वह डेनिश बुनाई परंपरा को आगे बढ़ाने में सहायक रही है।

वर्ष 1970 में पाउला ट्रॉक से वर्कशॉप लेने के पश्चात कई वर्षों तक उनके अधीन काम करने के बाद इन्होंने उसी परंपरा का पालन करते हुए स्टूडियो को जारी रखा है। एक परंपरा जहाँ शिल्प की गुणवत्ता इसके मूल में है, लेकिन नई सामग्री के साथ प्रयोगों के माध्यम से लगातार विकसित होने वाली अभिव्यक्ति के साथ।

प्रदर्शित तीन पर्दे इस बात के उदाहरण हैं कि किस प्रकार घर के लिए रोज़मर्रा के साधारण वस्त्रों को मूर्तिकला के गुण दिए जाते हैं,जो घर के अंदर दिन की रोशनी आने देने की इच्छा के साथ निजता की आवश्यकता को जोड़ते हैं। यह गुण पाउला ट्रॉक की डिजाइन भाषा का प्रत्यक्ष परिणाम हैं, जो पाँच साल के अंधेरे के उपरांत युद्ध के बाद के वर्षों में आने वाले प्रकाश के उत्सव का परिणाम हो सकते हैं।

Hanne Vedel works with raw materials of the finest quality, whether it's wool, linen or silk. These are spun into coarse yarns lending a peculiarly rough texture to the otherwise refined textiles. She uses delicate colors that are subordinate to the spaces they were designed for while adding materiality and warmth.

Through Vedel's workshop Spindegården (see also Paula Trock) and her teaching at Kolding Design School, she has been instrumental in carrying on the Danish weaving tradition.

Since taking over the workshop in 1970 from Paula Trock, after having worked under her for many years, she has continued the studio following in the same tradition. A tradition where the quality of the craft is at the core, but with a continuously evolving expression through experiments with new materials.

The three curtains on display are examples of how simple everyday textiles for the home are given sculptural qualities, combining the need for privacy with the wish to let in the daylight. This quality is directly descendant from Paula Trock's design language, which may be a result of the post-war years' celebration of the light after five years of darkness.